

एयर शो में शक्ति प्रदर्शन, गांजारी में क्रिकेट का महाकुंभ!

♦ गंगा के तट पर उमड़ा जनसैलाब, अब स्टेडियम के उद्घाटन पर नजरें
♦ 30 हजार दर्शकों की क्षमता, करीब 450 करोड़ की परियोजना; विकास के इस नए अध्याय के सियासी मायने भी अहम सुरेश गांधी

वाराणसी। काशी ने आसमान में भारत का शौर्य देखा, गंगा के तट पर जनसैलाब का सामर्थ्य दिखाया और अब निगाहें गांजारी पर हैं। भारतीय वाइसेना के एयर शो में उमड़ी भीड़ ने एक सवाल छोड़ दिया है—जब गंगा के ऊपर लड़ाकू विमानों की गर्जना सुनने के लिए पूरा शहर उमड़ पड़ा, तब अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम के उद्घाटन और पहले बड़े मुकाबले पर कैसा जनउत्सव देखने को मिलेगा?

यह सवाल महज भीड़ का आकलन नहीं, बल्कि बदलती काशी, बढ़ती आकांक्षाओं और विकास के राजनीतिक निहितार्थों को समझने की एक खिड़की भी है। एयर शो की तस्वीरें बहुत कुछ कहती हैं। गंगा के घाटों से लेकर नदी के दोनों किनारों तक, दूर-दूर तक नजर आते जनसमूह और आसमान में करतब दिखाते लड़ाकू विमान। ड्रोन से कैद ये दृश्य आयोजन के व्यापक आकर्षण की गवाही देते हैं। आयोजन में 25 लाख से अधिक लोगों के पहुंचने का दावा किया जा रहा है, हालांकि इस संख्या की आधिकारिक पुष्टि के बिना इसे अंतिम आंकड़ा मानना उचित नहीं होगा। लेकिन तस्वीरों में दिखाई दे रही भीड़ का विस्तार अपने आप में असाधारण जनभागीदारी का संकेत है।

गंगा के तट से गांजारी के मैदान तक: काशी की पहचान

सदियों से आस्था, अध्यात्म और संस्कृति की रही है। अब इसी पहचान के साथ आधुनिक विकास, खेल और बड़े आयोजनों की नई तस्वीर भी जुड़ रही है। एयर शो ने जहां भारतीय वायुसेना की क्षमता और शौर्य को जनमानस के सामने साकार किया, वहीं गांजारी का अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम पूर्वांचल को खेल के वैश्विक मानचित्र पर नई पहचान दिलाने की क्षमता रखता है। कल्पना कीजिए, स्टेडियम का उद्घाटन हो, अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट का मुकाबला खेला जाए और मैदान में देश-दुनिया के दिग्गज खिलाड़ी उतरें। दर्शक दीर्घा में क्रिकेट का रोमांच हो, बाहर शहर की सड़कों पर उत्सव जैसा माहौल और आसपास के जिलों से काशी पहुंचने को आतुर प्रशंसकों की कतारें। वाराणसी के साथ गाजीपुर, जौनपुर, चंदौली, मिर्जापुर, भदोही, आजमगढ़ और मऊ तक के



क्रिकेटप्रेमियों के लिए यह आयोजन आकर्षण का केंद्र बन सकता है। जिस तरह एयर शो ने लोगों को गंगा के तट तक खींचा, उसी तरह क्रिकेट का जुनून गांजारी तक लोगों को पहुंचा सकता है। यह केवल खेल का आयोजन नहीं होगा। इसके साथ होटल, परिवहन, खानपान, स्थानीय

जरूरतों पर भी उतना ही ध्यान दिया जाए। भीड़ का उत्साह, विकास की कसौटी: बड़े आयोजनों की सफलता का एक चेहरा भीड़ है, लेकिन दूसरा चेहरा वह बदलाव है जो आयोजन के बाद लोगों के जीवन में दिखाई देता है। सड़कें कितनी सुधरीं, यातायात कितना सुगम हुआ, स्थानीय कारोबार को कितना लाभ मिला, रोजगार के कितने अवसर बने और आम नागरिक को विकास का कितना हिस्सा मिला—इन सवालों के जवाब ही किसी आयोजन की वास्तविक उपलब्धि तय करते हैं। एयर शो ने काशी की आयोजन क्षमता, जनभागीदारी और राष्ट्रीय गौरव के प्रति लोगों के उत्साह को सामने पैदा हो सकते हैं। गांजारी स्टेडियम के सामने इससे आगे जाने का अवसर होगा। वह खेल के साथ अर्थव्यवस्था, पर्यटन और स्थानीय प्रतिभाओं के विकास का केंद्र बन

सकता है। इसके लिए जरूरी होगा कि स्टेडियम तक पहुंचने के रास्ते, पार्किंग, सार्वजनिक परिवहन, सुरक्षा और आसपास की नागरिक सुविधाओं को भी मजबूत किया जाए। 2027 के सियासी समीकरणों पर भी नजर: इस पूरे घटनाक्रम का राजनीतिक पहलू भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। उत्तर प्रदेश में 2027 के विधानसभा चुनाव की ओर बढ़ते माहौल में विकास की परियोजनाएं, बड़े आयोजन और जनता के बीच उनकी स्वीकार्यता राजनीतिक विमर्श को प्रभावित कर सकते हैं। एयर शो में उमड़ी भीड़ और गांजारी स्टेडियम को लेकर पैदा हो रहा उत्साह सत्तारूढ़ दल के लिए विकास की उपलब्धियां गिनाते का अवसर बन सकता है। लेकिन लोकतंत्र में भीड़ को सीधे वोटों में बदलकर देखना राजनीतिक भूल होगी। एयर शो देखने पहुंचा हर

व्यक्ति किसी दल का समर्थक नहीं होता और क्रिकेट का प्रशंसक होना किसी राजनीतिक विचारधारा का प्रमाण नहीं है। किसी आयोजन की लोकप्रियता और चुनावी समर्थन के बीच अंतर समझना जरूरी है। आखिरकार, मतदाता का फैसला केवल भव्य आयोजनों से नहीं बनता। रोजगार, महंगाई, शिक्षा, स्वास्थ्य, कानून-व्यवस्था, स्थानीय समस्याओं का समाधान और सरकार के प्रति भरोसा भी उसकी कसौटी होते हैं। बड़े आयोजन सकारात्मक माहौल जरूर बनाते हैं, लेकिन उस माहौल को स्थायी जनसमर्थन में बदलने के लिए विकास का लाभ आम आदमी तक पहुंचना चाहिए। जनउत्साह से जनविश्वास तक का सफर: काशी के सामने इस समय अवसर भी बड़ा है और जिम्मेदारी भी। गंगा के तट पर एयर शो की भव्यता ने जनभागीदारी की तस्वीर दिखाई है।

कांग्रेस ने भारतीय संस्कृति से दूरी बनाई, पाकिस्तान और बांग्लादेश की संस्कृति अपनाई : हिमंत विश्व शर्मा

असम, 26 अक्टूबर। असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने सोमवार को कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे की प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर की गई टिप्पणी की आलोचना की और आरोप लगाया कि कांग्रेस ने भारतीय संस्कृति से दूरी बना ली है और पाकिस्तान तथा बांग्लादेश की संस्कृति अपना ली है। दरअसल खरगे ने रविवार को एक विवादास्पद बयान देते हुए कहा था, "मोदी का बाप भी जाएगा" उन्होंने यह टिप्पणी उस समय की, जब दर्शकों में से एक व्यक्ति ने कहा कि प्रधानमंत्री नहीं जाने वाले। शर्मा ने एक कार्यक्रम से इतर संवाददाताओं से कहा, "मल्लिकार्जुन खरगे के लिए लोगों का अपमान करना कोई नवी बात नहीं है। उन्होंने डॉ. भूपेन हजारिका का अपमान किया था... आज उन्होंने नरेन्द्र मोदी के दिवंगत पिता



का जिक्र करके प्रधानमंत्री की आलोचना की है।" मुख्यमंत्री ने यह भी आरोप लगाया कि खरगे के बेटे और कर्नाटक सरकार में मंत्री प्रियंक खरगे ने राज्य में सेमीकंडक्टर संयंत्र की घोषणा के समय असम के लोगों की आलोचना की थी। शर्मा ने कहा, "मेरे विचार से कांग्रेस के पतन का मुख्य कारण यह है कि वह हमारी संस्कृति, सभ्यता से बहुत दूर चली गई है। उसने भारतीय संस्कृति से दूरी बनाते हुए पाकिस्तान और बांग्लादेश की संस्कृति एवं सभ्यता को अपना

लिया है।" उन्होंने दावा किया कि इसी कारण लोग कांग्रेस को पसंद नहीं कर रहे हैं और चुनावों में उसे नकार रहे हैं। शर्मा ने कहा, "जब वे चुनाव हारते हैं, तो 'वोट चोरी' का आरोप लगाते हैं। मुझे नहीं लगता कि कांग्रेस के बारे में मुझे और कुछ कहने की जरूरत है।" यह विवाद बिहार के पहले मुख्यमंत्री श्रीकृष्ण सिंह की 139वीं जयंती के अवसर पर पटना में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान शुरू हुआ। खरगे ने वहां अपने संबोधन में कहा था कि कांग्रेस मतदाता सूचियों के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) में कथित अनियमितताओं के लिए जिम्मेदार लोगों को जेल भेजेगी। इस पर दर्शकों में से एक व्यक्ति ने कहा कि जब तक विद्रोह नहीं होगा, तब तक प्रधानमंत्री मोदी नहीं जाएंगे। इसके जवाब में कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा था कि "मोदी का बाप भी जाएगा।

नई दिल्ली, 26 अक्टूबर। मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) को लेकर चुनाव आयोग और विपक्ष के बीच विवाद तेज हो गया है। चुनाव आयोग ने सोमवार को सुप्रीम कोर्ट में 15 बिंदुओं वाला जवाबी हलफनामा दाखिल कर अपनी प्रक्रिया और फैसलों का बचाव किया। आयोग ने मतदाता सूची में अनियमितताओं के आरोपों को खारिज करते हुए याचिका के आधार पर भी सवाल उठाए। आयोग का कहना है कि याचिका एक समाचार रिपोर्ट पर आधारित है। मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार और दोनों चुनाव आयुक्तों सुखबीर सिंह संधू तथा विवेक जोशी ने इस हलफनामे को सर्वसम्मति से मंजूरी दी। यह मामला राहुल गांधी और विपक्षी गठबंधन



इंडिया ब्लॉक के अन्य नेताओं की याचिका से जुड़ा है। सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव आयोग, मुख्य चुनाव आयुक्त

और दोनों चुनाव आयुक्तों को नोटिस जारी किया था। याचिकाकर्ताओं ने एसआईआर से जुड़े आधिकारिक

रिकॉर्ड सार्वजनिक करने, मतदाता सूची से हटाए गए नामों का स्वतंत्र ऑडिट कराने और बुधवार सूची उपलब्ध कराने की मांग की है। विपक्ष का कहना है कि किसी योग्य मतदाता का नाम बिना सूचना दिए और उसे अपना पक्ष रखने का अवसर दिए बिना नहीं हटाया जाना चाहिए। आयोग ने अपने जवाब में निर्णय लेने की प्रक्रिया, फॉर्म-6, मतदाता सूची और डिजिटल डेटाबेस को लेकर उठाए गए

सवालों पर सफाई दी है। चुनाव आयोग ने अपने जवाबी हलफनामे में एसआईआर की प्रक्रिया और मतदाता सूची से जुड़े विवादों पर 15 प्रमुख बातें रखीं। हलफनामे को सर्वसम्मति से मंजूरी... मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार और दोनों चुनाव आयुक्तों सुखबीर सिंह संधू तथा विवेक जोशी ने जवाबी हलफनामे को सर्वसम्मति से मंजूरी दी।

सरकार की मंजूरी, अब E100 ईंधन से चलेंगी फ्लेक्स-फ्यूल गाड़ियां

नई दिल्ली। सड़क परिवहन मंत्रालय ने सोमवार को 'केंद्रीय मोटर वाहन नियम 1989' में बदलावों की अधिसूचना जारी की। इसके तहत ऐसे फ्लेक्स-फ्यूल वाहनों को अनुमति दी गई है, जो E100 (लगभग शुद्ध इथेनॉल) तक के ईंधन पर चल सकते हैं। सड़क परिवहन मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि E20 (20



प्रतिशत इथेनॉल मिश्रित पेट्रोल) से लेकर E100 तक का ईंधन केवल उन्हीं वाहनों के लिए है, जिन्हें इसके

इस्तेमाल के लिए विशेष रूप से डिजाइन और प्रमाणित किया गया है। यह अन्य वाहनों पर लागू नहीं होगा। जो वाहन E20 या सामान्य ईंधन का उपयोग करते हैं, वे E85 या E100 ईंधन का इस्तेमाल नहीं कर सकते। सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि इन संशोधनों के जरिए उत्सर्जन प्रमाणन के नियमों को अपडेट किया

गया है, जिसमें E85 के साथ-साथ E100 को भी स्पष्ट रूप से शामिल किया गया है। मंत्रालय ने आगे कहा, इन ईंधनों के लिए प्रमाणित वाहनों को अपनी श्रेणी पर लागू होने वाले उत्सर्जन और सुरक्षा मानकों को पूरा करना होगा। इस अधिसूचना में बायोडीजल से जुड़े नियमों को भी अपडेट किया गया है और कुछ तकनीकी सुधार किए गए हैं।

दो सगे भाइयों की हत्या में 19 साल बाद बड़ा फैसला, ब्लाक प्रमुख समेत आठ आरोपी दोषी करार

आजमगढ़। ग्राम पंचायत चुनाव की रजिश्न को लेकर करीब 19 वर्ष पूर्व हुए दोहरे हत्याकांड और इसी मामले के क्रॉस केस में अदालत ने सोमवार को सुनवाई की। अपर सत्र न्यायाधीश कोर्ट नंबर एक कमलापति की अदालत ने दोहरे हत्याकांड में ब्लाक प्रमुख विपिन सिंह समेत आठ आरोपियों को हत्या का दोषी करार दिया है। वहीं, क्रॉस केस में कातिलाना हमले और मारपीट के मामले में छह आरोपियों को दोषी पाया है। सजा के बिंदु पर सुनवाई के लिए अदालत ने 29 अक्टूबर को तिथि निर्धारित की है। अभियोजन पक्ष के अनुसार, रानी की सराय थाना क्षेत्र के रुद्री गांव निवासी रामजन्म सिंह ने 21 अक्टूबर 2007 को दशहरा के दिन सुबह करीब नौ बजे अपने दरवाजे पर बैठे थे। तभी तत्कालीन ग्राम प्रधान विपिन सिंह, राजेश सिंह, चुन्नु उर्फ रणविजय, बलवंत सिंह, राधेश्याम सिंह, छोट्ट उर्फ पंकज, लोकनाथ सिंह, जीवन प्रकाश और शिवदास सिंह हथियारों से लैस होकर उनके दरवाजे पर पहुंच गए। आरोप था कि विपिन सिंह के ललकारने पर वहां मौजूद लोगों ने हमला कर दिया। इस दौरान दो सगे भाई तालुकदार सिंह और पारसनाथ सिंह की गोली लगने से मौत हो गई।



DAKS REHAB CENTRE

(PARALYSIS PHYSIOTHERPHY CENTER AND OLD AGE HOME)

Contact us: 9820519851

विल्डिंग नंबर 3, प्लॉट नंबर 3, आदर्श घरकुल सोसायटी सायन कोलीवाडा जीटीवी नगर मुंबई-37

- * Stroke/Paralysis/Complete Rehab Centre
- * बाहर से आये रोगी और उनके परिजनो के ठहरने कि व्यवस्था
- * वृद्ध लोगों के लिए रहने की सुविधा उपलब्ध
- * DM/HT/THYROID इन सब से कैसे बचें
- * NGO में मिलनेवाली सहायता को लोगों में देना
- * चिकिस्ता उपकरणो को किराये और बिक्री सुविधा उपलब्ध
- * एम्बुलेंस सेवा उपलब्ध
- * पोस्ट ऑपरेटिव रिहैब सेंटर
- * मरीजों के लिए घर पर 12 और 24 घंटे जीडीए परिचारक
- * विशेषज्ञ डॉक्टरों से ऑनलाइन और ऑफलाइन परामर्श की सुविधा उपलब्ध
- * मासिक ईएमआई के आधार पर व्यक्तियों, परिवारो और माता-पिता के लिए स्वास्थ्य निती की चिकिस्ता सुविधा उपलब्ध





मेवा भारती जौनपुर, काशी प्रांत

हाटा आयोजित

॥ श्री राम कथा ॥

दिनांक : 21 अक्टूबर 2026 से 29 अक्टूबर 2026

स्थान - बी. आर.पी. इंटर कॉलेज मैदान, जौनपुर

कथा समय - अपराह्न 3 बजे से सांय 6 बजे तक

भव्य कलश यात्रा एवं झांकी

दिनांक : 20 अक्टूबर 2026, सुबह 09:00 बजे से

हनुमान घाट से केराटवीर मंदिर चहारसू चौराहा ओलन्दगंज, पॉलिटेक्निक चौराहा, वाजिदपुर तिराहा, बी.आर.पी. इण्टर कॉलेज, मैदान

कथा व्यास : परम्पूज्य आचार्य शान्तनु जी महाराज

आप सभी रामचरणानुगामी भक्तजन सादर आमंत्रित हैं।

मुख्य आयोजक

ज्ञान प्रकाश सिंह

स्तरहीनता एवं विरोध की भाषा में उलझती कांग्रेस



-ललित गर्ग

लोकतंत्र में सत्ता और विपक्ष एक-दूसरे के विरोधी अवश्य होते हैं, लेकिन उनकी भाषा शत्रुता की नहीं, वैचारिक प्रतिस्पर्धा की होनी चाहिए। राजनीतिक मतभेद लोकतंत्र की शक्ति हैं, पर जब ये मतभेद व्यक्तिगत कटाक्ष, पारिवारिक टिप्पणियों और अपमानजनक शब्दों में बदलने लगते हैं, तब राजनीति का स्तर गिरता है और लोकतांत्रिक संस्थाओं की गरिमा प्रभावित होती है। भारतीय राजनीति में



उपस्थित एक व्यक्ति की टिप्पणी के जवाब में उन्होंने कहा, मोदी का बाप भी जाएगा। इस बयान की भारतीय जनता पार्टी के नेताओं ने तीखी आलोचना की। दूसरी ओर, कांग्रेस ने इस टिप्पणी को वैचारिक संदर्भ में समझाने का प्रयास किया। समाचारों के अनुसार संबंधित व्यक्ति ने भी बाद में कहा कि उनकी पूरी बात नहीं सुनी गई थी। इस घटनाक्रम के विभिन्न पक्ष अपनी-अपनी व्याख्या प्रस्तुत कर रहे हैं, लेकिन विवाद से अलग एक बुनियादी प्रश्न अपनी जगह कायम है-क्या देश के सर्वोच्च राजनीतिक पद पर आसीन व्यक्ति के प्रति विरोध जताने का यही तरीका होना चाहिए?

खड़े कांग्रेस के वरिष्ठ नेता हैं और लंबे राजनीतिक अनुभव के साथ पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष की जिम्मेदारी निभा रहे हैं। ऐसे व्यक्ति से सार्वजनिक मंच पर अधिक संयम और विवेक की अपेक्षा स्वाभाविक है। राजनीतिक सभा में कोई प्रतिकूल टिप्पणी हो जाए, तो उसका उत्तर तर्क, तथ्य और आत्मविश्वास से दिया जा सकता है। लेकिन जब जवाब व्यक्तिगत संबंधों और परिवार तक पहुंच जाए, तब मुद्दे की गंभीरता पीछे छूट जाती है और शब्दों का विवाद मुख्य समाचार बन जाता है। राजनीति में शब्द केवल वक्ता की तत्काल प्रतिक्रिया नहीं होते, वे उसकी सार्वजनिक जिम्मेदारी और लोकतांत्रिक संस्कारों की भी परीक्षा लेते हैं। कांग्रेस की राजनीति में नरेंद्र मोदी को लेकर तीखे और विवादास्पद वक्तव्यों का इतिहास भी इस बहस को व्यापक संदर्भ देता है। वर्ष 2007 में सोनिया गांधी ने गुजरात विधानसभा चुनाव के दौरान मोदी के लिए मौत का सीढ़ागर शब्द का प्रयोग किया था। वर्ष 2014 के लोकसभा चुनाव में मणिशंकर अय्यर की याचवाला संबंधी टिप्पणी ने भी बड़ा राजनीतिक विवाद पैदा किया। बाद के वर्षों में राहुल गांधी के चौकीदार चोर है नारे ने राजनीतिक बहस को व्यक्तिगत आरोपों की दिशा में मोड़ा। इन बयानों के पीछे अपने-अपने राजनीतिक संदर्भ और वक्ताओं की दलीलें रही हैं, लेकिन इनका सार्वजनिक प्रभाव इस प्रश्न को सामने लाता है कि क्या किसी नेता की आलोचना उसके कामकाज तक सीमित रखी जा सकती है, अथवा उसे व्यक्तिगत उल्टास का विषय बनाना आवश्यक समझा जाने लगा है?

प्रियंका गांधी सहित कांग्रेस के अन्य नेताओं ने भी मोदी और उनकी सरकार के विरुद्ध कई अवसरों पर तीखे राजनीतिक हमले किए हैं। यह ध्यान रखना जरूरी है कि तीखी आलोचना अपने आप में अमर्यादित नहीं होती। सरकार की नीतियों, बेरोजगारी, महंगाई, सामाजिक सद्भाव, लोकतांत्रिक संस्थाओं और प्रशासनिक निर्णयों पर कठोर सवाल उठाना विपक्ष का वैधानिक अधिकार है। समस्या तब उत्पन्न होती है, जब नीतिगत असहमति को व्यक्तिगत अपमान से जोड़ दिया जाता है और तर्क के स्थान पर कटाक्ष को राजनीतिक प्रभाव का माध्यम बनाया जाने लगता है। किसी नेता के प्रत्येक बयान को एक ही श्रेणी में भाषा उचित नहीं, लेकिन बार-बार होने वाले विवादों से राजनीतिक भाषा के स्तर पर विचार करने की आवश्यकता अवश्य पैदा होती है। यहां कांग्रेस के सामने एक बड़ी चुनौती है। विपक्ष के रूप में उसकी सार्थकता इस बात से तय होगी कि वह जनता के जीवन से जुड़े प्रश्नों पर कितना प्रभावी विमर्श खड़ा करती है। किसानों की समस्याएं, युवाओं के रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक असमानता और सामाजिक न्याय जैसे मुद्दों पर ठोस विश्लेषण प्रस्तुत करना उनकी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। यदि सार्वजनिक चर्चा बार-बार प्रधानमंत्री पर व्यक्तिगत टिप्पणियों तक सिमट जाती है, तो नीतिगत बहस पीछे छूटने का खतरा रहता है। इससे विपक्ष की आलोचना का वास्तविक आधार भी कमजोर पड़ सकता है। राजनीतिक विमर्श में मुद्दों की जगह व्यक्तियों को केन्द्र में रख देने से लोकतंत्र को अपेक्षित लाभ नहीं मिलता।

दूसरी ओर नरेंद्र मोदी का व्यक्तिगत और उनकी वैश्विक सक्रियता भारतीय राजनीति के महत्वपूर्ण पहलू हैं। प्रधानमंत्री के रूप में उनकी विदेश यात्राएं, विभिन्न देशों के नेतृत्व के साथ संवाद, अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की भागीदारी और आर्थिक एवं रणनीतिक साझेदारियों को आगे बढ़ाने के प्रयास देश की वैश्विक भूमिका से जुड़े हैं। उनके समर्थक इन गतिविधियों को भारत की प्रतिष्ठा और प्रभाव में वृद्धि के रूप में देखते हैं। साथ ही, किसी भी प्रधानमंत्री के कार्यकाल का निष्पक्ष आकलन केवल अंतरराष्ट्रीय छवि से नहीं, बल्कि घरेलू नीतियों, आर्थिक परिणामों, सामाजिक समावेशन और शासन के रिकॉर्ड से भी किया जाना चाहिए। लोकतंत्र की सुंदरता इसी में है कि नेतृत्व की उपलब्धियों का सम्मान हो और उसके निर्णयों की आलोचनात्मक समीक्षा भी संभव बनी रहे। वह भी विचारणीय है कि किसी नेता के विरुद्ध जितनी अधिक व्यक्तिगत और अपमानजनक भाषा का इस्तेमाल होता है, उतना ही उसके समर्थकों में प्रतिक्रिया की भावना पैदा हो सकती है। नरेंद्र मोदी के संदर्भ में कांग्रेस की आलोचना का राजनीतिक असर हमेशा एक जैसा रहा हो, ऐसा निष्कर्ष निकालना तथ्यों से परे होगा। चुनावी परिणाम अनेक कारणों से प्रभावित होते हैं-नेतृत्व, संगठन, स्थानीय मुद्दे, उम्मीदवार, गठबंधन और मतदाताओं की अपेक्षाएं। फिर भी, यह एक महत्वपूर्ण राजनीतिक जोखिम है कि यदि विपक्ष अपनी आलोचना को प्रमाण और नीतिगत वित्कलों के बजाय व्यक्तिगत टिप्पणियों पर आधारित करता है, तो वह अपनी बात जनता तक प्रभावी ढंग से पहुंचाने का अवसर खो सकता है। इसके विपरीत भाजपा को भी केवल विरोधियों के विवादास्पद बयानों पर प्रतिक्रिया देने के बजाय अपने कामकाज और नीतियों के आधार पर जनता के सामने जवाबदेह रहना चाहिए।

राजनीति की भाषा समाज के व्यवहार को प्रभावित करती है। जब शीर्ष नेता सार्वजनिक मंचों पर संयम खोते हैं, तब उनके समर्थकों और राजनीतिक कार्यकर्ताओं के बीच भी कटुता बढ़ने की आशंका रहती है। सोशल मीडिया इस प्रवृत्ति को और तेज कर देता है, जहां किसी बयान का छोट्टा-सा अंश पूरे विमर्श पर हावी हो सकता है। इसलिए नेताओं को बोलने से पहले शब्दों के सामाजिक प्रभाव और पद की गरिमा पर विचार करना चाहिए। राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी को अपमानित करना और उसके तर्कों को पराजित करना दो अलग बातें हैं, लोकतंत्र में दूसरी बात अधिक महत्वपूर्ण है। अंततः कांग्रेस हो या भाजपा, किसी भी दल का विचारणीय है कि किसी नेता के विरुद्ध लोकतांत्रिक अधिकार है, लेकिन आलोचना तथ्यों और तर्कों पर आधारित होनी चाहिए। इसी प्रकार कांग्रेस अध्यक्ष खड़ेगें हो या सत्तापक्ष के अन्य नेता सभी से अपेक्षा है कि वे असहमति को अपमान में न बदलें। राजनीति में शब्दों की मर्यादा कोई औपचारिक शिष्टाचार नहीं, बल्कि लोकतंत्र की आत्मा है। सत्ता बदलेगी, नेता बदलेंगे और दलों की स्थितियां बदलेंगी, लेकिन सार्वजनिक जीवन में बोले गए शब्द लंबे समय तक समाज की स्मृति में रहते हैं। इसलिए राजनीति को कटुता की नहीं, संवाद की भाषा चाहिए, क्योंकि लोकतंत्र में विचारों की विजय होनी चाहिए, व्यक्तिगत अपमान की नहीं।

आत्मघाती कड़वाहट: हताशा में मर्यादा की लक्ष्मण रेखा भूली कांग्रेस



अशोक भाटिया

भारतीय लोकतंत्र का इतिहास वैचारिक असहमतियों, तीखे तर्कों और धारदार बहसों से समृद्ध रहा है। संसद से लेकर सड़क तक, देश ने दक्षिणपंथ से लेकर वामपंथ और क्षेत्रीय अस्मिताओं के बीच बड़े-बड़े वैचारिक द्वंद्व देखे हैं। लेकिन, अतीत में इन सभी बहसों की एक अंतर्निहित मर्यादा होती थी। राजनीतिक विरोधी एक-दूसरे की नीतियों पर प्रहार करते थे, चरित्र और मर्यादाओं पर नहीं। दुर्भाग्य से, समकालीन राजनीति ने संवाद की उस समृद्ध परंपरा को हाशिए पर धकेल दिया है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे द्वारा हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनके दिवंगत पिता को लेकर की गई एक बेहद विवादित टिप्पणी (मोदी का बाप भी जाएगा) और उसके बाद आज पूरे देश में मंचा सियासी बवाल इसी कड़वी हकीकत की तस्दीक करता है। पटना के एक कार्यक्रम में सामने आए इस बयान ने न केवल एक बड़ा राजनीतिक तूफान खड़ा कर दिया है, बल्कि यह सवाल भी नए सिरे से उठा दिया है कि क्या देश का राजनीतिक नेतृत्व जन-सरोकारों से ध्यान भट्काने के लिए भाषा की मर्यादा की बलि चढ़ाने पर आमादा है?

घटनाक्रम की पृष्ठभूमि को देखें तो यह पहली बार नहीं है जब देश के सबसे पुराने राजनीतिक दल के सर्वोच्च पद पर बैठे नेता की जुबान फिसली हो। चुनावी रैलियों या राजनीतिक मंचों पर तात्कालिक तालियां बटोरने या कार्यकर्ताओं में जोश भरने के उत्साह में अक्सर नेता अपनी सीमाएं लांघ जाते हैं। पटना की सभा में जब भीड़ से किसी ने नारा लगाया या कुछ कहा, तो उसके जवाब में कांग्रेस अध्यक्ष का आपा खोना और प्रधानमंत्री के उस दिवंगत पिता तक पहुंच जाना, जो कभी राजनीति का हिस्सा ही नहीं रहे, किसी भी सभ्य समाज और स्वस्थ लोकतंत्र में स्वीकार्य नहीं माना जा सकता। आज इसी का नतीजा है कि भारतीय जनता पार्टी देश भर के सभी राज्य मुख्यालयों में इसके खिलाफ राष्ट्रव्यापी प्रदर्शन कर रही है, पटना की अदालतों में शिकायतें दर्ज हो रही हैं और संसद से लेकर सड़कों तक का माहौल एक बार फिर वैचारिक विमर्श के बजाय व्यक्तिगत प्रतिशोध की आग में झुलस रहा है।

इस पूरे विवाद में दोनों पक्षों की अपनी-अपनी दलीलें और रणनीतियां हैं। केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह और निधिन गडकरी जैसे भाजपा के शीर्ष नेताओं ने इसे लोकतंत्र की न्यूनतम मर्यादाओं को तार-तार करने वाला कृत्य करार दिया है। सत्ता पक्ष का तर्क है कि जब विपक्ष नीतियों के मोर्चे पर सरकार को घेरने में नाकाम रहता है, तो वह व्यक्तिगत कुंठा और हताशा में इस तरह के आक्षेपों पर उतर आता है। दूसरी तरफ, मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस और उसके समर्थकों की ओर से सफाई पेश की जा रही है कि इस बयान को संदर्भ से काटकर देखा जा रहा है। उनका कहना है कि



मल्लिकार्जुन खड़गे का इरादा किसी के स्वर्गीय पिता का व्यक्तिगत अपमान करना नहीं था, बल्कि वे एक वैचारिक संदर्भ (राष्ट्रीय



स्वयंसेवक संघ या सरकार की नीतियां) में अपनी तीखी राजनीतिक प्रतिक्रिया दे रहे थे। लेकिन क्या राजनीति में 'संदर्भ' की आड़ लेकर व्यक्तिगत गरिमा पर चोट करने की छूट दी जा सकती है? यह एक ऐसा बुनियादी सवाल है, जिससे कोई भी दल बच नहीं सकता।

इस मुद्दे का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पहलू इसका भौगोलिक और राष्ट्रीय विस्तार है। मल्लिकार्जुन खड़गे स्वयं दक्षिण भारत (कर्नाटक) के एक बेहद वरिष्ठ और जमीनी नेता हैं, जिन्होंने दशकों तक संसदीय राजनीति को करीब से देखा है। वहीं, यह घटना उत्तर भारत के राजनीतिक रूप से सबसे जागरूक राज्य बिहार (पटना) में घटित हुई। ऐसे में यह केवल एक क्षेत्रीय विवाद नहीं रह जाता, बल्कि यह उत्तर से लेकर

गंगा के आकाश से भारत का उद्घोष, दुश्मन का कोई ठिकाना पहुंच से बाहर नहीं



-सुरेश गांधी

गंगा के आकाश में शौर्य की इबारत, दुनिया तक पहुंचा भारत की वायुशक्ति का संदेश

गंगा की लहरों पर सूरज की किरणें उतर रही थीं और ऊपर आसमान में भारतीय वायुसेना के लड़ाकू विमान अपनी गति, संतुलन और सामर्थ्य का परिचय दे रहे थे। कहीं राफेल की गर्जना थी, कहीं सुखोई की तीव्र उड़ान, कहीं तेजस की फुर्ती और कहीं सूर्यकिरण की टीम का रोमांचक हवाई प्रदर्शन। नीचे नमो घाट पर उमड़ा जनसमुद्र हर करतब के साथ उत्साह से भर उठता था। यह केवल विमानों का प्रदर्शन नहीं था; यह आधुनिक भारत की तकनीकी क्षमता, सैन्य अनुशासन और राष्ट्रीय आत्मविश्वास का सार्वजनिक उद्घोष था।

विंसे ओवर गंगा के अंतिम दिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मौजूदगी ने आयोजन को राष्ट्रीय महत्व प्रदान किया। काशी के आकाश में वायुसेना का यह प्रदर्शन देश की सामरिक तैयारियों को सामने लाने के साथ ही उस सांस्कृतिक धरातल की भी याद दिला रहा था, जिस पर भारत की राष्ट्रीय चेतना विकसित हुई है। गंगा यहां केवल एक नदी नहीं, बल्कि हजारों वर्षों की सभ्यता की साक्षी है। इसी गंगा के ऊपर आधुनिक युद्धक विमानों का अनुशासित प्रदर्शन अतीत की विरासत और भविष्य की तकनीकी शक्ति को एक ही दृश्य में समेट रहा था।

इस आयोजन के केन्द्र में भारतीय वायुसेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल एपी सिंह भी रहे। उनकी वर्दी पर सजे पदक सैन्य सेवा और जिम्मेदारी की कहानी कहते थे, जबकि नमो घाट पर आम लोगों के बीच उनकी सहज मौजूदगी नेतृत्व का आत्मीय पक्ष सामने ला रही थी। बच्चों और युवाओं से हाथ मिलाना, लोगों को बातें सुनना और उनके साथ तस्वीरें खिंचवाना उस दूरी को कम करता दिखाई दिया, जो अक्सर सैन्य प्रतिष्ठानों और आम नागरिकों के बीच महसूस की जाती है। लेकिन इस भव्य आयोजन का महत्व केवल रोमांच, उत्साह और जनभागीदारी तक सीमित नहीं था। इसके पीछे राष्ट्रीय सुरक्षा का एक गंभीर संदेश भी था-भारत अपनी सीमाओं की रक्षा के लिए तकनीकी, प्रशिक्षण, खुफिया जानकारी और आधुनिक



बहुस्तरीय वायु रक्षा, इलेक्ट्रॉनिक युद्ध, निगरानी प्रणालियां, मानवरहित हवाई प्रणालियों से निपटने की क्षमता और सुरक्षित नेटवर्क लगातार महत्वपूर्ण होते जा रहे हैं। भविष्य की वायुशक्ति का स्वरूप भी इसी बदलाव से तय होगा। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, स्वदेशी तकनीक, सटीक हथियार और नेटवर्क आधारित संचालन सैन्य अभियानों की प्रकृति बदल रहे हैं। ऐसे में वायुसेना की चुनौती केवल वर्तमान क्षमताओं को

अनुशासन लेकर आती है, लेकिन उसका वास्तविक सम्मान उस जिम्मेदारी से निर्मित होता है, जिसका निर्वहन उसके माध्यम से किया जाता है। जब सैन्य नेतृत्व जनता के बीच सहजता से उपस्थित होता है, तो संस्थान और नागरिक समाज के बीच विश्वास का रिश्ता मजबूत होता है। विशेष रूप से युवाओं के लिए ऐसे आयोजन प्रेरणा का माध्यम बन सकते हैं। आसमान में विमानों को देखकर पैदा होने वाला कौतूहल

एयर चीफ मार्शल एपी सिंह के नेतृत्व में विंसे ओवर गंगा ने रचा इतिहास, ऑपरेशन सिंदूर से दुनिया को भारत की सामरिक क्षमता का संदेश। जी हां, ऑपरेशन सिंदूर ने न सिर्फ वायुशक्ति की क्षमता दिखाई बल्कि काशी में गंगा के आकाश से देश को सामर्थ्य का संदेश भी दिया. गंगा के ऊपर लड़ाकू विमानों की गर्जना, नमो घाट पर उमड़ा जनसमुद्र और देश की वायुशक्ति का प्रदर्शन के साथ ही विंसे ओवर गंगा ने काशी को राष्ट्रीय चर्चा के केन्द्र में ला दिया। इस ऐतिहासिक आयोजन के बीच भारतीय वायुसेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल एपी सिंह से मूलाकात का अवसर भी यादगार रहा। उनकी वर्दी पर सजे पदक सैन्य सेवा के गौरव की गवाही दे रहे थे, तो आम लोगों के बीच उनकी सहज मौजूदगी नेतृत्व का आत्मीय पक्ष सामने ला रही थी

बनाए रखने की नहीं, बल्कि आने वाले दशकों की जरूरतों को समझते हुए नई तकनीक और प्रशिक्षण में निवेश करने की थी है। हॉविंस ओवर गंगाहू में दिखाई गई उड़ानें इस तैयारी का सार्वजनिक चेहरा थीं। दर्शकों ने विमानों के करतब देखे, लेकिन उन करतबों के पीछे वर्षों का प्रशिक्षण, तकनीकी दक्षता, अनुशासन और समन्वय भी काम कर रहा था। यही वह अदृश्य श्रम है, जो किसी हवाई प्रदर्शन को सैन्य पेशेवर क्षमता की अभिव्यक्ति में बदल देता है।

नमो घाट पर वर्दी का गौरव और सहजता का संवाद किसी सैन्य आयोजन की पहचान उसके हथियारों और तकनीक से बनती है, लेकिन जनता की स्मृति में कई बार उससे जुड़े मानवीय दृश्य अधिक समय तक बने रहते हैं। नमो घाट पर एयर चीफ मार्शल एपी सिंह का आम लोगों के बीच पहुंचना ऐसा ही दृश्य रहा। बच्चों और युवाओं से हाथ मिलाने, उनकी बातों सुनने और उनके साथ तस्वीरें खिंचवाते वायुसेना प्रमुख को देखकर लोगों में उत्साह दिखाई दिया। उनके लिए यह केवल किसी बड़े अधिकारी को देखने का अवसर नहीं था, बल्कि उस संस्थान के नेतृत्व को करीब से अनुभव करने का क्षण भी था, जिसे देश की सुरक्षा की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गई है। वर्दी अपने साथ अधिकार और

हो रही, बल्कि पराजय सिर्फ और सिर्फ भारतीय लोकतंत्र की हो रही है। जब देश के शीर्ष नेता सार्वजनिक मंचों से एक-दूसरे के प्रति इस कदर कड़वाहट और व्यक्तिगत द्वेष का प्रदर्शन करेंगे, तो जमीनी स्तर पर कार्यकर्ताओं के बीच हिंसक टकराव और घृणा को कैसे रोका जा सकता है? सोशल मीडिया के इस दौर में, जहाँ एक-एक शब्द सेकंडों में करोड़ों लोगों तक पहुंचता है, नेताओं की जिम्मेदारी और अधिक बढ़ जाती है।

एक जीवंत और परिपक्व लोकतंत्र की पहचान इस बात से होती है कि वहाँ की जनता के बुनियादी मुद्दों पर कितनी गंभीर चर्चा होती है। आज जब देश के सामने युवाओं की बेरोजगारी, बदलती अर्थव्यवस्था, महंगाई, आंतरिक सुरक्षा और वास्तविक नियंत्रण रेखा पर चीनी सेना की गश्ती जैसी गंभीर राष्ट्रीय चुनौतियाँ हैं, तब मुख्यधारा की राजनीति का कई दिनों तक केवल एक बयान पर अटक जाना देश के समय और संसाधनों की बर्बादी है। देश का युवा, चाहे वह उत्तर प्रदेश और बिहार की प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहा हो या बंगलुरु और हैदराबाद का ईसी सेक्टर में अपनी नौकरियाँ बाँट

रखने के लिए संघर्ष कर रहा हो, वह अपने नेताओं से यह उम्मीद करता है कि वे संसद और मंचों से रोजगार सृजन, आर्थिक नीतियों और भविष्य के भारत का खाका पेश करें। इसके विपरीत, उन्हें देखने को मिलती है तो सिर्फ व्यक्तिगत कीचड़ उछलने की राजनीति।

राजनीति में शुचिता और मर्यादा का संकट केवल चुनाव जीतने या हारने तक सीमित नहीं है। यह आने वाली पीढ़ी के राजनीतिक संस्कारों

को भी तय करता है। यदि आज के युवा यह देखेंगे कि देश के सबसे शीर्ष पदों पर बैठे या विपक्ष का नेतृत्व करने वाले लोग एक-दूसरे के प्रति इतनी अमर्यादित भाषा का प्रयोग कर रहे हैं, तो वे राजनीति को एक गंभीर और सेवाभावी क्षेत्र के रूप में देखना बंद कर देंगे। राजनीतिक दलों को यह समझना होगा कि प्रधानमंत्री का पद किसी व्यक्ति विशेष का नहीं, बल्कि देश की लोकतांत्रिक संस्था का प्रतीक होता है। उस पद की एक गरिमा होती है, जिसका सम्मान सत्त

पक्ष और विपक्ष दोनों को करना चाहिए। ठीक इसी तरह, विपक्ष के नेता का पद भी लोकतंत्र का एक अनिवार्य स्तंभ है, उसकी साख को भी बनाए रखना उतना ही जरूरी है। पटना की यह घटना और उसके बाद देश भर में मंचा हंगामा भारतीय राजनीति के लिए एक 'वेक-अप कॉल' होना चाहिए। यह केवल सत्ता की एक तात्कालिक जंग नहीं है, बल्कि यह हमारे लोकतंत्र के गिरते स्तर का एक गंभीर लक्षण है। अब समय आ गया है कि देश के सभी राजनीतिक दल, चाहे वे सत्ता में हों या विपक्ष में, मिलकर संवाद की एक न्यूनतम आचार संहिता तय करें। राजनीति में कड़े से कड़े मतभेदों को भी शालीनता और तर्कों के साथ रखा जा सकता है। देश की जनता अब इस तरह की व्यक्तिगत बयानबाजी और उसके बाद होने वाले राजनीतिक तमाशों से थक चुकी है। उत्तर से लेकर दक्षिण तक, भारत का सजग मतदाता अब नेताओं को उनके काम, उनकी नीतियों और उनके व्यवहार की कसौटी पर कर्मण के लिए तैयार बैठा है। नेताओं को यह नहीं भूलना चाहिए कि जुबान भले ही फिसल जाए, लेकिन जनता की याददास्त बहुत मजबूत होती है।

राष्ट्रीय महत्व का आयोजन विंसे ओवर गंगा के अंतिम दिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मौजूदगी ने इस आयोजन को व्यापक राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य प्रदान किया। नमो घाट पर उमड़ी भीड़ धीरे-धीरे अपने घरों को चली जाती है। लेकिन स्मारक डाक टिकट किसी आयोजन को उसकी तत्कालीन भव्यता से आगे ले जाकर ऐतिहासिक स्मृति का हिस्सा बना देता है। काशी के संदर्भ में इसका महत्व और बढ़ जाता है। यहां गंगा, घाट, मंदिर, संगीत और सांस्कृतिक परंपराएं शहर की पहचान का अभिन्न हिस्सा हैं। इसी धरातल पर आधुनिक वायुसेना की छवि अंकित होना भारत के उस स्वरूप को सामने लाता है, जो अपनी जड़ों से जुड़ा रहते हुए भविष्य की ओर देखता है।

सुबह-ए-बनारस में वायुसेना प्रमुख, गंगा तट पर संगीत की सुरलहरियां

काशी में हॉविंस ओवर गंगाहू का महत्व केवल तीन दिनों के हवाई प्रदर्शन तक सीमित नहीं है। इसने भारत की वायुशक्ति, आधुनिक सैन्य तकनीक, राष्ट्रीय सुरक्षा और सांस्कृतिक पहचान को एक साथ प्रस्तुत किया। ऑपरेशन सिंदूर से जुड़ा सामरिक संदेश इस आयोजन को व्यापक संदर्भ देता है, जबकि गंगा के ऊपर उड़ते विमानों वाला विशेष डाक टिकट इसकी स्मृति को स्थायित्व प्रदान करता है। एयर चीफ मार्शल एपी सिंह का जनता के बीच सहज व्यवहार और सुबह-ए-बनारस में उनकी सांस्कृतिक आयोजन के मानवीय और सांस्कृतिक पक्ष को सामने लाती है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि राष्ट्रीय संस्थाओं की शक्ति केवल उनकी तकनीकी क्षमता में नहीं, बल्कि जनता के विश्वास और उनके साथ संवाद में भी निहित होती है। गंगा के ऊपर विमानों की गर्जना थम चुकी है, लेकिन उसके साथ जुड़ी छवियां लंबे समय तक स्मृति में रहेंगी-आसमान में उड़ते लड़ाकू विमान, नमो घाट पर उमड़ा जनसमुद्र, वायुसेना प्रमुख की सहज व्यवहारिता और गंगा के नाम जारी विशेष डाक टिकट। काशी ने इन दृश्यों में एक ऐसे सांस्कृतिक विरासत को संजोया है, जो अपनी सामरिक क्षमताओं का विस्तार कर रहा है। यही विंसे ओवर गंगा का सबसे व्यापक संदेश है-परंपरा से जुड़ाव, तकनीक में प्रगति और राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति निरंतर सजगता।

एयर चीफ मार्शल एपी सिंह का काशी प्रवास केवल सैन्य प्रदर्शन तक सीमित नहीं रहा। उन्होंने ब्रह्म मुहूर्त में गंगा तट पर सुबह-ए-बनारस का आनंद लिया। पत्नी सरिता सिंह के साथ प्रातःकालीन दैनिक हवन में शामिल हुए और कलाकारों की वाद्यवृंद प्रस्तुति सुनी। इस अवसर पर तबले पर पंडित किशोर मिश्र और डॉ. संदीप केवले, सितार पर बुधार्थिन प्रधान, सारंगी पर अनीश मिश्र तथा बांसुरी पर डॉ. शशीष वाघेली ने प्रस्तुति दी। गंगा तट पर सुबह की शांति, शास्त्रीय वाद्यों की सुरलहरियां और काशी की आध्यात्मिक वातावरण इस यात्रा का अलग ही पक्ष प्रस्तुत कर रहे थे। एयर चीफ मार्शल ने गंगा किनारे की इस सुबह को अभिभूत करने वाला अनुभव बताया। यह प्रतिष्ठित यात्रा सांस्कृतिक आकर्षण की भी झलक देती है, जिसके कारण काशी देश-दुनिया के लोगों को अपनी ओर खींचती है। एक ओर गंगा के ऊपर लड़ाकू विमानों की गर्जना थी, दूसरी ओर सुबह के शांत वातावरण में सितार, सारंगी और बांसुरी की धुनें। ये दोनों दृश्य देखने में भले ही अलग हों, लेकिन इनके केन्द्र में अनुशासन, साधना और निरंतर अभ्यास की समान भावना दिखाई देती है। सैन्य कौशल हो या शास्त्रीय संगीत, उत्कृष्टता वर्षों की तैयारी और समर्पण से ही हासिल होती है। प्रधानमंत्री की मौजूदगी से

मल्लिकार्जुन खरगे देश से माफ़ी मांगें : मंत्री मंगलप्रभात लोढा मुंबई (उत्तरशक्ति)। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे द्वारा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बारे में दिए गए आपत्तिजनक बयान की कैबिनेट मंत्री मंगलप्रभात लोढा ने कड़े शब्दों में निंदा की है। खरगे अपने बयान के लिए देश से माफ़ी मांगें, ऐसी मांग मंत्री लोढा ने की। इस संबंध में कैबिनेट मंत्री मंगलप्रभात लोढा ने कहा कि विनाशकाले विपरीत बुद्धि। इससे पहले राहुल गांधी छोटे बच्चों की तरह व्यवहार कर रहे थे। मल्लिकार्जुन खरगे ने जो बयान दिया, उससे उनकी बुद्धि कितनी है, यह दिखाई दिया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एक महान व्यक्तित्व हैं और उनके बारे में इस तरह का बयान देना किसी को भी शोभा नहीं देता। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बारे में आपत्तिजनक बयान देना केवल एक व्यक्ति का अपमान नहीं, बल्कि देश का अपमान है, ऐसा मंत्री लोढा ने कहा। खरगे अपने बयान के लिए देश से माफ़ी मांगें। अन्यथा जनता उन्हें माफ नहीं करेगी, ऐसी चेतावनी भी मंत्री लोढा ने दी।

श्री सनातन सामाजिक संस्था द्वारा मुफ्त नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन,124 लोगों को मिले निःशुल्क चश्मे

कोलेगांव (उत्तरशक्ति)। जरूरतमंद लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने के उद्देश्य से श्री सनातन सामाजिक संस्था द्वारा भक्तिवेदांत हॉस्पिटल के सहयोग से निःशुल्क नेत्र जांच, चश्मा वितरण एवं मोतियाबिंद ऑपरेशन के लिए विशेष शिविर का आयोजन किया गया। कोलेगांव के समाजसेवी अशोक पाटिल के निवास परिसर में आयोजित इस सामाजिक पहल में बिग बी ब्रदर्स ग्रुप, कोलेगांव ने विशेष सहयोग दिया। शिविर में कुल 130 लोगों की आंखों की जांच की गई। इनमें से 124 जरूरतमंद लोगों को निःशुल्क चश्मे वितरित किए गए, जबकि जांच के दौरान 9 लोगों में मोतियाबिंद की शिकायत पाई गई। इन मरीजों का निःशुल्क ऑपरेशन मीरा रोड स्थित भक्तिवेदांत हॉस्पिटल में किया जाएगा। इस सेवा कार्य में श्री सनातन सामाजिक संस्था के संस्थापक एवं अध्यक्ष सुभाष यादव के साथ शिवसागर यादव, राजेंद्र सिंह यादव, डॉ. आर. डी. गौतम, रमेश यादव (सर), रामकिशोर यादव, कृष्णकुमार यादव, सुनील गुप्ता, सभाजीत यादव (सर), सुरेश यादव, जामवंत यादव, चंद्रजीत यादव, दिनेश गुप्ता और पंदरी यादव, विद्यासागर चौधरी का महत्वपूर्ण योगदान रहा। वहीं, कोलेगांव के समाजसेवी अशोक बंडू पाटिल तथा बिग बी ब्रदर्स ग्रुप के अजीत हरिचंद्र पाटिल, अभिषेक अशोक पाटिल, विजय (मोन्) वर्मा और सूरज वनवास म्हात्रे ने भी आयोजन को सफल बनाने में विशेष सहयोग दिया। श्री सनातन सामाजिक संस्था की इस पहल से जरूरतमंद लोगों को निःशुल्क नेत्र जांच, चश्मे और मोतियाबिंद ऑपरेशन की सुविधा उपलब्ध कराने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास किया गया।

विश्व यादव संघ की मासिक बैठक में 18 नवंबर को रेंगांगला शौर्य दिवस मनाना तय



मुंबई (उत्तरशक्ति)। विश्व यादव संघ की केंद्रीय कार्यकारिणी एवं जिला कार्यकारिणी की मासिक बैठक रविवार, 25 अक्टूबर 2026 को मुलुंड पश्चिम स्थित श्री मुलुंड नागरिक सभागृह में सफलतापूर्वक संपन्न हुई। बैठक दोपहर 2 बजे से शाम 6 बजे तक आयोजित की गई, जिसमें संगठनात्मक गतिविधियों और आगामी कार्यक्रमों को लेकर विस्तृत चर्चा की गई। बैठक में आगामी 18 नवंबर को रेंगांगला शौर्य दिवस मनाने की तैयारियों पर विशेष रूप से विचार-विमर्श हुआ। ईशान्य मुंबई जिला अध्यक्ष श्री सुदर्शन यादव के नेतृत्व में भांडूप में शौर्य दिवस आयोजित करने की योजना पर चर्चा की गई। इस दौरान कार्यक्रम को गरिमामय एवं सफल बनाने के लिए आवश्यक तैयारियों और आयोजन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर विचार साझा किए गए। बैठक में विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित विश्वविख्यात कवि एवं गायक विलास नागेश्वर नीलकंठ का पुष्पगुच्छ शाल भेंट कर सम्मानपूर्वक अभिनंदन किया गया। उपस्थित पदाधिकारियों ने संगठन की एकजुटता, सामाजिक सहभागिता और आगामी कार्यक्रमों को सफल बनाने के लिए मिलकर कार्य करने पर जोर दिया। बैठक के अंत में उपस्थित सदस्यों ने आपसी विचार-विमर्श के बाद अल्पाहार ग्रहण किया। इसके साथ ही सभा का गरिमामय वातावरण में समापन हुआ।

विवेक विद्यालय का वार्ड स्तरीय प्रतियोगिताओं में शानदार प्रदर्शन मुंबई। विवेक एजुकेशन सोसायटी द्वारा संचालित विवेक विद्यालय, पार्कमाइट, विक्रोली (पश्चिम), मुंबई ने विभिन्न वार्ड स्तरीय प्रतियोगिताओं में उल्लेखनीय सफलता हासिल कर शैक्षणिक एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में अपनी उत्कृष्ट परंपरा को कायम रखा है। विद्यार्थियों की रचनात्मकता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और कलात्मक प्रतिभा की शिक्षकों के उचित मार्गदर्शन के कारण विद्यालय की उपलब्धियों में कई नए अध्याय जुड़े हैं। शिक्षण निरीक्षक, बृह-मुंबई उत्तर विभाग की ओर से आयोजित 54वीं एन वार्ड स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनी में विवेक विद्यालय के विद्यार्थियों ने शानदार प्रदर्शन किया। छोटे समूह में विद्यार्थियों ने तेरता हुआ घर नामक अभिनव परियोजना प्रस्तुत की। इस परियोजना में अनुज थोरात और समृद्धि सालवे ने भाग लिया। वहीं, बड़े समूह में एसी के पानी का पुनः उपयोग विषय पर पर्यावरण संरक्षण और जल संवर्धन का संदेश देने वाली परियोजना प्रस्तुत की गई। इसमें राजेश मोरे, अन्वेष वाढवळ और शुभम पट्टे ने सहभागिता की। इन विद्यार्थियों को सविता कोरगांवकर और पुरुषोत्तम पाटील का मार्गदर्शन मिला। इसके अलावा, जनसंख्या शिक्षा प्रतियोगिता में सहायक शिक्षिका स्वाती धुमाळ ने द्वितीय स्थान हासिल कर विद्यालय की उपलब्धियों में एक और उपलब्धि जोड़ी।

उत्तरशक्ति

* संपादक: ओमप्रकाश प्रजापति

* उप संपादक: प्रेम चंद मिश्रा

*प्रबंध संपादक: डा. शेषधर बिन्द

उपरोक्त सभी पद अवैतनिक है।

पत्राचार कार्यालय :

उत्तरशक्ति (हिंदी दैनिक)

मुंबई-पूणे मोटर मालक श्रमजीवन प्रिमाणसेस को.सो., बी-5, ए-337 ट्रक टर्मिनल डब्लू.टी.टी. रोड, आर.टी.ओ. जबल ऑटोफ हिल वडाला, मुंबई-37

मो.- 9554493941

email ID- uttarshaktinews@gmail.com

देवकी अपार्टमेंट हादसे के पीड़ितों को बड़ी राहत, एमएमआरडीए के घरों में मिलेगी अस्थायी पनाह, एक महीने का राशन भी देंगे मंत्री प्रताप सरनाईक

♦**स्ट्रक्चरल ऑडिट पर उठाए सवाल, लापरवाही की जांच और दोषियों पर खड़ी कार्रवाई के निर्देश; खतरनाक इमारतों के पुनर्विकास के लिए मिनी वलस्टर योजना पर जोर मीरा-भायंदर (उत्तरशक्ति)।** भायंदर पूर्व के अत्यंत व्यस्त नवंबर रोड परिसर स्थित 30 वर्ष से अधिक पुरानी देवकी अपार्टमेंट इमारत का एक बड़ा हिस्सा आधी रात के दौरान अचानक ढह गया। इस हादसे से पूरे मीरा-भायंदर शहर में चिंता का माहौल है। गनीमत रही कि इस दुर्घटना में किसी की जान नहीं गई, लेकिन कई परिवारों के सिर से छत छिन गई और उनके सामने रहने की गंभीर समस्या खड़ी हो गई। घटना की गंभीरता को देखते हुए महाराष्ट्र के परिवहन मंत्री तथा धाराशिव जिले के पालकमंत्री प्रताप सरनाईक ने तत्काल घटनास्थल का दौरा कर स्थिति का जायजा लिया। उन्होंने प्रभावित परिवारों को राहत पहुंचाने के लिए प्रशासन को आवश्यक कदम उठाने के निर्देश दिए। साथ ही, बेघर हुए परिवारों के अस्थायी निवास की व्यवस्था और एक महीने के राशन की जिम्मेदारी लेने की घोषणा की। स्ट्रक्चरल ऑडिट के बावजूद इमारत कैसे



ढही। देवकी अपार्टमेंट का महानगरपालिका के माध्यम से स्ट्रक्चरल ऑडिट किए जाने के बावजूद इमारत का हिस्सा ढहने पर मंत्री प्रताप सरनाईक ने सवाल उठाए। उन्होंने संबंधित अधिकारियों से ऑडिट की प्रक्रिया, उसकी रिपोर्ट

पक्ष की लापरवाही सामने आती है, तो नियमानुसार कार्रवाई की जाए। उन्होंने शहर की अन्य खतरनाक इमारतों की सुरक्षा व्यवस्था की भी तत्काल समीक्षा करने पर जोर दिया, ताकि भविष्य में इस तरह की दुर्घटनाओं को रोकने के लिए समय रहते आवश्यक कदम उठाए जा सकें। एमएमआरडीए के खाली घरों में अस्थायी निवास, एक महीने का राशन भी मिलेगा हादसे से प्रभावित परिवारों को तत्काल राहत देने के उद्देश्य से मंत्री सरनाईक ने महानगरपालिका आयुक्त को निर्देश दिए कि मामले की गहन जांच की जाए तथा यदि किसी अधिकारियों से ऑडिट की प्रक्रिया, उसकी रिपोर्ट

डॉ. दिनेश रामनरेश सिंह को मिला नेशनल आइडियल डायरेक्टर अवार्ड 2026



महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विद्यार्थियों की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के साथ-साथ उनके बौद्धिक, नैतिक, सामाजिक और व्यक्तिगत विकास पर ध्यान देना उनकी कार्यशैली का प्रमुख हिस्सा है। उनकी मानना है कि शिक्षा का

उद्देश्य केवल किताबी ज्ञान देना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को जिम्मेदार नागरिक बनाना और उनके उज्ज्वल भविष्य की नींव मजबूत करना भी है। इस उपलब्धि पर उन्हें बधाई देते हुए डॉ. सुशील पालीवाल सहित उनके शुभचिंतकों ने इसे शिक्षा जगत के लिए गर्व का विषय बताया। यह सम्मान उनके समर्पण, मेहनत और शिक्षा के प्रति प्रतिबद्धता का प्रतीक है। डॉ. सिंह को यह उपलब्धि अन्य शिक्षाविदों और शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत लोगों के लिए भी प्रेरणादायक है।

तारापुर औद्योगिक क्षेत्र में ट्रक की टक्कर से 20 वर्षीय युवक की मौत

पालघर(उत्तरशक्ति)। जिले के बोईसर तारापुर औद्योगिक क्षेत्र में शनिवार 24 अक्टूबर की शाम ट्रक की टक्कर से दोपहिया सवार 20 वर्षीय युवक की दर्दनाक मौत हो गई। मृतक की पहचान दांडी निवासी स्वरूप सागर ओरेकर के रूप में हुई है। वह तारापुर औद्योगिक क्षेत्र स्थित टाटा स्टील कंपनी में कार्यरत था। काम की पाली समाप्त होने के बाद घर लौटते समय हुए इस हादसे से इलाके में शोक की लहर फैल गई है। प्राप्त जानकारी के अनुसार शनिवार शाम ड्यूटी खत्म होने के बाद स्वरूप अपनी दोपहिया गाड़ी से घर जा रहा था। इसी दौरान एमआईडीसी पुलिस थाने से कैमलिन नाका की ओर जाने वाले मार्ग पर पीछे से आ रहे एक ट्रक ने उसकी गाड़ी को टक्कर मार दी। परिजनों के अनुसार ट्रक चालक द्वारा



ओवरटेक करने का प्रयास किये जाने के दौरान यह दुर्घटना हुई। हादसे में स्वरूप की मौत हो गई। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। मृतक के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। बोईसर पुलिस द्वारा दुर्घटना के संबंध में आगे की जांच की रही है। वहीं स्वरूप के परिवार पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा है। महज छह महीने पहले उसके पिता का निधन हुआ था और अब युवा बेटे की सड़क दुर्घटना में मौत हो जाने से परिवार पर

दुखों का दोहरा आघात पड़ा है। इस हृदयविदारक घटना से दांडी सहित आसपास के क्षेत्रों में शोक व्यक्त किया जा रहा है। इस हादसे के बाद तारापुर औद्योगिक क्षेत्र में भारी वाहनों की आवाजाही और सड़क सुरक्षा का मुद्दा एक बार फिर चर्चा में आ गया है। औद्योगिक क्षेत्र में ट्रकों सहित अन्य भारी वाहनों की बड़ी संख्या में आवाजाही होती है। ऐसे में दोपहिया वाहन चालकों की सुरक्षा सुनिश्चित करना बेहद जरूरी है। स्थानीय स्तर पर मांग उठ रही है कि संबंधित विभाग इस मार्ग की निरीक्षण करें, यातायात नियमों का सख्ती से पालन सुनिश्चित करें, भारी वाहनों की गति पर नियंत्रण रखें और दुर्घटनाओं की आशंका वाले स्थानों पर आवश्यक सुरक्षा उपाय करें, ताकि भविष्य में इस तरह की दुखद घटनाओं को रोका जा सके।

उल्हासनगर में ज्योति कलानी लाइली छात्रा योजना की शुरुआत

उल्हासनगर (उत्तरशक्ति)। उल्हासनगर में बेटियों की शिक्षा को प्रोत्साहित करने और आर्थिक कारणों से उनकी पढ़ाई में बाधा न आए, इस उद्देश्य से महाराष्ट्र के उल्हासनगर में पहली बार ज्योति कलानी लाइली छात्रा योजना की शुरुआत की गई है। सांसद डॉ. श्रीकांत शिंदे की संकल्पना से शुरू की गई इस पहल के माध्यम से शहर की लगभग 19 हजार छात्राओं को लाभ पहुंचाने का लक्ष्य रखा गया है। इस योजना के तहत कक्षा 7वीं से 12वीं तक पढ़ने वाली छात्राओं को हर महीने 500 रुपये, यानी सालाना 6,000 रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान की जाएगी ऐसी जानकारी महापौर अश्विनी निकम ने



दी है, बतादे की इस योजना को बालिकाओं की शिक्षा, आत्मनिर्भरता और उज्ज्वल भविष्य की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। आर्थिक सहायता मिलने से छात्राओं को अपनी पढ़ाई

से जुड़ी आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद मिलेगी। साथ ही, परिवारों पर शिक्षा से संबंधित खर्च का कुछ बोझ भी कम हो सकेगा। इस अवसर पर उल्हासनगर के तमाम शिवसेना पदाधिकारी मौजूद थे।

मीरा रोड के वार्ड 16 में पानी की समस्या के समाधान के लिए तीनों नगरसेवकों की पहल

♦**संबंधित अधिकारियों से मुलाकात कर जल्द राहत देने की मांग, आज से आवश्यक कदम उठाने का आश्वासन मीरा भायंदर (उत्तरशक्ति)।** मीरा रोड के वार्ड क्रमांक 16 में लगातार बढ़ती पानी की समस्या को लेकर तीनों नगरसेवकों ने पहल करते हुए संबंधित अधिकारियों से मुलाकात की और क्षेत्र के नागरिकों को जल्द से जल्द राहत दिलाने की मांग की। इस दौरान नगरसेवक नवीन सिंह, प्रतिभा जट और वंदना भावसार ने पानी की समस्या को अधिकारियों के समक्ष रखा। उन्होंने क्षेत्र में नियमित जलापूर्ति सुनिश्चित करने और

जाएँ। इससे क्षेत्र के नागरिकों को जल्द राहत मिलने की उम्मीद है। इस अवसर पर नगरसेवक नवीन सिंह ने कहा,हहमारा संकल्प स्पष्ट है—जनता की समस्या, हमारी जिम्मेदारी है। उन्होंने आगे कहा कि वार्ड के नागरिकों की मूलभूत समस्याओं के समाधान के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं और जनहित से जुड़े मुद्दों को संबंधित अधिकारियों के समक्ष उठाकर उनके समाधान की दिशा में काम किया जाएगा। वार्ड क्रमांक 16 में पानी की समस्या के समाधान के लिए तीनों नगरसेवकों की इस पहल के बाद अब नागरिकों को संबंधित विभाग की कार्रवाई और नियमित जलापूर्ति बहाल होने का इंतजार है।

♦**141 किसान सदस्यों ने लिया हिस्सा ♦आधुनिक कृषि तकनीक और उन्नत खेती पद्धतियों की जानकारी हासिल की**

पालघर(उत्तरशक्ति/अजीत सिंह)। काटाले विविध कार्यकारी सेवा सहकारी सोसायटी की ओर से किसान सदस्यों के लिए 23 और 24 अक्टूबर को दापोली स्थित कृषि विश्वविद्यालय में अध्ययन दौरा का आयोजन किया गया। इस दौरान सोसायटी के कुल 141 किसान सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। काटाले विविध कार्यकारी सेवा सहकारी सोसायटी खरीफ और रबी फसलों के लिए अपने सदस्यों



को ऋण उपलब्ध कराती है। संस्था से लगभग 1100 किसान जुड़े हुए हैं। पालघर तहसील में बड़े पैमाने पर कृषि ऋण वितरित करने वाली इस संस्था को पिछले 25 वर्षों से ऑडिट श्रेणी भी प्राप्त है। संस्था की ओर से किसानों के विकास और उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत करने के उद्देश्य से वर्षभर विभिन्न योजनाएं एवं कार्यक्रम संचालित की जाती हैं। अध्ययन दौरे के दौरान किसानों को खेती को अधिक आधुनिक, लाभदायक और टिकाऊ बनाने के लिए नये कृषि प्रयोगों तथा उन्नत तकनीकों की जानकारी प्राप्त करने का अवसर मिला। इस प्रकार के आयोजनों से किसानों को अपने अनुभव साझा करने, नई

बढ़ावा देने वाले ऐसे कार्यक्रम आयोजित करने की अपेक्षा व्यक्त की। इस अवसर पर सोसायटी के चेयरमैन मार्टंड पाटील, संचालक रुपेश अधिकारी, किरण पाटील, विशेषज्ञ संचालक महेन्द्र राऊत, संतोष पाटील, भरत पाटील, मनोहर पाटील, हेमंत पाटील व शिवराम पाटील के अलावा किसान सदस्यों में कमलाकर अधिकारी, राजेंद्र अधिकारी, मनोज राऊत, संतोष घरत, रामभाऊ राऊत, मिलिंद राऊत, रमेश घरत और सुभाष राऊत के साथ महिला किसान तृप्ती पाटील, रेणुका जाधव तथा रंजना जाधव सहित अनेक किसान सदस्यों ने इस अध्ययन दौरे में सहभागिता की।

रामलीला में दशरथ मरण, केवट संवाद और भरत मनावन प्रसंग का भावपूर्ण मंचन

श्री राम के वनवास और भरत के भ्रातृप्रेम के प्रसंगों ने दर्शकों को किया भावविभोर

मुंबई (उत्तरशक्ति)। बोरीवली श्री आदर्श रामलीला उप समिति, बोरीवली के तत्वावधान में पं. रामजस उपाध्याय रामलीला मैदान, बोरीवली (पश्चिम) में आयोजित रामलीला महोत्सव में सोमवार, 26 अक्टूबर 2026 को भगवान श्रीराम के वन गमन से जुड़े महत्वपूर्ण प्रसंगों दशरथ मरण, केवट संवाद तथा भरत मनावन का भावपूर्ण मंचन किया गया। कलाकारों ने अपने सजीव अभिनय, प्रभावशाली संवादों और मार्मिक प्रस्तुतियों से उपस्थित रामभक्तों को भावविभोर कर दिया। रामलीला के दौरान राजा दशरथ के श्रीराम के वनवास के वियोग में व्याकुल होने और अंततः प्राण त्यागने के दृश्य ने दर्शकों की आंखें नम कर दीं। पिता-पुत्र के प्रेम और वियोग की मार्मिक प्रस्तुति ने पूरे वातावरण को भावुक बना दिया। वहीं, केवट संवाद के माध्यम से भगवान श्रीराम और केवट के बीच भक्ति, प्रेम, श्रद्धा और समर्पण का अद्भुत चित्रण किया गया। केवट की अनन्य भक्ति और प्रभु श्रीराम के प्रति



उसकी श्रद्धा ने दर्शकों का मन मोह लिया। भरत के भ्रातृप्रेम ने जीता दर्शकों का दिल, भरत मनावन प्रसंग में भरत जी द्वारा भगवान श्रीराम को अयोध्या लौटकर राजपाट सنبालने के लिए मनाने का दृश्य विशेष आकर्षण का केंद्र रहा। भरत जी का त्याग, भ्रातृप्रेम, कर्तव्यनिष्ठा और भगवान श्रीराम के प्रति समर्पण कलाकारों ने प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। इस प्रसंग के माध्यम से भाईचारे, त्याग और मर्यादा का संदेश दिया गया। गणमान्य अतिथियों की रही उपस्थिति इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में कांदिवली पूर्व के

विधायक अतुल भातखलकर उपस्थित रहे। उनके साथ राघवेंद्र सेवा मंच के अध्यक्ष सुरेंद्र मिश्रा तथा भोजपुरी गायक एवं कलाकार राकेश तिवारी भी कार्यक्रम में शामिल हुए। समिति के अध्यक्ष एडवोकेट रामकृपाल उपाध्याय ने सभी अतिथियों का स्वागत किया और रामलीला महोत्सव में उपस्थित समस्त रामभक्तों के प्रति आभार व्यक्त किया। धार्मिक आस्था, भक्ति और सांस्कृतिक परंपरा से ओतप्रोत इस आयोजन ने दर्शकों को भगवान श्रीराम के आदर्शों तथा पारिवारिक मूल्यों से जुड़ने का संदेश दिया।

वाढवण बंदर के साथ विनाशकारी प्रकल्पों के विरोध में 30 अक्टूबर को जन आक्रोश सभा का आयोजन

♦**चौथी मुंबई, केमिकल जोन और अन्य परियोजनाओं पर संघर्ष समिति ने जताई चिंता ♦वरोर में सुबह 10 बजे जुटेंगे स्थानीय नागरिक**

पालघर(उत्तरशक्ति)। पालघर जिले में प्रस्तावित वाढवण बंदर सहित चौथी मुंबई, केमिकल जोन, रिफाइनरी, औद्योगिक परियोजनाओं और अन्य वियोग के विरोध में विभिन्न राजनीतिक दलों, सामाजिक संगठनों और स्थानीय समूहों ने एकजुट होकर आंदोलन का विगुल फूँका है। इस उद्देश्य से पालघर जिला विनाशकारी परियोजना विरोधी संघर्ष समिति का गठन किया गया है। समिति ने पर्यावरण, मछुआरों, किसानों और आदिवासी समुदायों के अधिकारों की रक्षा के लिए 30 अक्टूबर 2026 को सुबह 10 बजे वाढवण क्षेत्र के वरोर में भव्य जन आक्रोश सभा आयोजित करने की घोषणा की है। संघर्ष समिति का आरोप है कि जिले में प्रस्तावित कई बड़ी

परियोजनाओं के कारण स्थानीय लोगों के विस्थापन, उपजाऊ कृषि भूमि के अधिग्रहण, जंगलों के विनाश और समुद्री जैव विविधता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की आशंका है। समिति ने इन परियोजनाओं पर पुनर्विचार करने और स्थानीय नागरिकों के हितों को प्राथमिकता देने की मांग की है। समिति के अनुसार वाढवण बंदर के निर्माण के लिए समुद्र में बड़े पैमाने पर भराव, ड्रेजिंग और ब्रेकवॉटर निर्माण की योजना से समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र तथा मछलियों के प्रजनन क्षेत्रों पर असर पड़ सकता है। इससे पारंपरिक मछुआरों की आजीविका प्रभावित होने और तटीय परियोजनाओं से परिवारों के सामने विस्थापन का संकट खड़ा होने की आशंका जताई गई है। संघर्ष समिति ने वाढवण के निकट प्रस्तावित 5,000 एकड़ के केमिकल जोन पर चिंता व्यक्त की है। इसके अलावा पालघर तहसील के उसरणी, दांडा, खटाली, मधुकर नगर, भादवे और मथाणे गांवों में 1,215 हेक्टेयर क्षेत्र में एस्सार केपिटल एडवाइजरी के लिए प्रस्तावित रिफाइनरी एवं

पेट्रोकेमिकल परियोजना, महागांव में विराज के लिए प्रस्तावित स्टील परियोजना और रिलायंस से संबंधित परियोजनाओं पर भी सवाल उठाये गये हैं। समिति का कहना है कि इन औद्योगिक परियोजनाओं से पर्यावरण, स्थानीय कृषि और ग्रामीणों के जीवन पर प्रभाव पड़ सकता है। प्रस्तावित चौथी मुंबई परियोजना में पालघर जिले के 107 गांवों को शामिल किये जाने की योजना पर भी समिति ने आपत्ति जताई है। समिति के अनुसार शहर की बढ़ती पानी की जरूरतों से स्थानीय किसानों के जल संसाधनों पर दबाव पड़ सकता है। साथ ही भूमि अधिग्रहण और बड़े पैमाने पर शहरीकरण के कारण स्थानीय भूमिपुत्रों के सामने अपनी जमीन और पारंपरिक जीवनशैली बचाने की चुनौती खड़ी हो सकती है। ग्रीनफील्ड महामार्ग, नये रेल कॉरिडोर तथा मुंबई-अहमदाबाद मार्ग को समृद्धि महामार्ग से जोड़ने के लिए प्रस्तावित संघर्ष मार्गों के कारण कृषि भूमि, बागायती क्षेत्र व वनभूमि के अधिग्रहण की आशंका भी समिति ने जताई है।

